फार्मर फस्ट

फल एवं सब्जी उत्पादन बना आय का स्रोत

पुरुषोत्तम शर्मा*, सुनील कुमार*, मुकेश चौधरी*, विश्व भास्कर चौधरी*, आर.पी. द्विवेदी*, शान्तनु कुमार दुबे, महेश एच.एस.*, एस.के. सिंह*, अविनाश चंद्रा*, अतुल सक्सेना*, सचेन्द्र त्रिपाठी*, प्रतीक श्रीवास्तव*** और **रोहित वर्मा***

श्री ग्यासी रायकवार, भारतीय रेलवे के एक सेवानिवृत कर्मचारी हैं, और ग्राम ढिमरपुरा, ब्लॉक बड़ागांव जिला-झांसी के निवासी हैं। इनके पास खेती योग्य 3 एकड़ जमीन है। शुरूआत से ही उनका खेती के प्रति अधिक लगाव था। सरकारी कर्मचारी होने के बाद भी वह खेती में अपना समय जरूर दिया करते थे। सेवानिवृत होने के बाद इन्होंने खेती में पूरा समय देना शुरू कर दिया है। वर्तमान श्री रायकवार एक प्रगतिशील कृषक के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं।

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान द्वारा पॉली, पलिन्दा, ढीमरपुरा दातानगर एवं परवई गांव में फार्मर फर्स्ट परियोजना वर्ष 2016 से चलाई जा रही है। इस परियोजना के अंतर्गत किसानों को विभिन्न तकनीकी कृषि प्रणाली पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ में संस्थान द्वारा कई फसलों के उन्नत किस्म के बीज किसानों को दिए गए तथा कृषि की कई तकनीकियों पर खेती करने के लिए प्रेरित किया गया। इसमें ढिमरपुरा गांव के श्री ग्यासी रायकवार के यहां समन्वित कृषि पर जोर दिया गया। इनके यहां अमरूद एवं नीबू का बाग, सब्जी उत्पादन, फसल उत्पादन के साथ-साथ वर्मीकम्पोस्ट खाद एवं नेपियर घास को लगाया गया, जो पशुओं को वर्षभर चारा प्रदान कर सके। श्री ग्यासी रायकवार जी ने सब्जी उत्पादन को ज्यादा महत्व दिया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान द्वारा इस परियोजना के अंतर्गत श्री ग्यासी ने विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों में भाग लिया। इनमें फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, उन्नत चारा उत्पादन एवं पशुपालन आदि शामिल हैं। इन प्रशिक्षणों में इन्हें काफी कुछ सीखने को मिला। परियोजना के अंतर्गत श्री ग्यासी जी को विभिन्न संस्थानों में भ्रमण करवाया गया। इसमें इन्होंने सब्जी संस्थान वाराणसी, कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया, कृषि विज्ञान केन्द्र, झांसी, कृषि वानिकी झांसी आदि संस्थानों से कृषि योग्य बेहतर अनुभव प्राप्त किये।

परियोजना के अंतर्गत मिले लाभ-इस परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की फसलों एवं सब्जियों के उन्नत किस्म के बीज, चारा फसलों के बीज एवं चारा जड़ें व कई प्रकार के कीट एवं रोगों की रोकथाम हेतु दवा, मशीनरी आदि वर्ष 2016 से मिल रही हैं। परियोजना के अंतर्गत पिछले वर्षों से जो लाभ हुए उनका संक्षिप्त विवरण सारणी में दर्शाया गया है:

वृक्ष रोपण

फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत ग्यासी जी को अमरूद एवं नीबू के पौधे वितरित किये गए। श्री ग्यासी ने पौधों को

आय सारणी: परियोजना के अंतर्गत प्राप्त आय का विवरण

विवरण	फल, सब्जी एवं फसल	उत्पादन (लगभग)	दर (प्रति कि.ग्रा.)	वार्षिक आय (लगभग) रुपये
अमरूद (40)	फल	8 क्विंटल	रुपये 20/कि.ग्रा.	15,000
करौंदा (60)	फल	3.5 क्विंटल	रुपये 30/कि.ग्रा.	10,500
नीबू (30)	फल	4 क्विंटल	रुपये 40/कि.ग्रा.	16,000
पपीता (20)	फल	5 क्विंटल	रुपये 20/कि.ग्रा.	10,000
सब्जी	गोभी, टमाटर, लौकी, तोरई आदि	-	-	10,0000
अनाज	रबी, खरीफ	-	-	1,00,000
दूध	-	-	-	40,000
			कुल	रुपये 29,15,000

*भाकृअनुप-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी-284003 (उत्तर प्रदेश); **भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

नेपियर घास उत्पादन

इस परियोजना में किसानों को नेपियर चारे की एक महत्वपूर्ण किस्म दी गई, जो एक बार लगाने पर कम से कम 5 वर्ष तक पशुओं को चारा प्रदान करती है। यह पूरे वर्ष हरा चारा प्रदान करती है। इस चारे को श्री ग्यासी ने अपने खेत की मेड़ पर लगाया। कुछ दिनों तक तो उन्हें इससे सिर्फ चारा मिला। बाद में समझाया गया कि इसे अगर पूरे खेत के चारों तरफ लगाया जाये, तो काफी फायदा होगा। इसकी जड़ों को भी बेचा जा सकता है। इससे चारे के अतरिक्त फायदा मिल सकता है। श्री ग्यासी के पास 3 भैंसें हैं। इनके लिये उन्हें वर्षभर चारा मिलता रहता है। नेपियर घास के कारण चारे की उपलब्धता में 20-25 प्रतिशत वृद्धि हुई एवं इससे पहले, परिवार के लोग चारा लेने के लिए इधर-उधर भटकते रहते थे अब ऐसा नहीं होता है। नेपियर घास से वर्षभर हरा चारा उपलब्ध होता रहता है एवं दूध उत्पादन में भी 1.13 लीटर प्रति भैंस वृद्धि हुई।

एक उचित दूरी पर लगभग 0.5 एकड़ के क्षेत्र में अमरूद के पौधे लखनऊ-49 एवं ललित किस्म व नीबू कागजी लगाया। इसकी इन्होंने अच्छे से देखरेख की और आज गांव के बीचों-बीच एक सुन्दर अमरूद एवं नीबू का बाग लगा हुआ है। इसका एक वर्ष में उत्पादन लगभग 15-20 हजार रुपये निकलता है। इन्होंने बाग के किनारे पर करौंदा के पौधे रोपित किये जो अलग से आय का स्रोत हैं।

जैविक कीट नियंत्रण

परियोजना की शुरूआत में किसान फेरोमोन ट्रैप के बारे में अपरिचित थे। वर्तमान में इनकी सब्जी परियोजना के माध्यम से जैविक कीट नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप लगाकर कीट नियंत्रण किया जा रहा है। इससे इन्हें रासायनिक कीटनाशक पर होने वाले खर्चों से राहत मिली एवं कीटनाशक से होने वाली शारीरिक हानि से भी सुरक्षा हुई। कीटनाशक के स्थान पर इन्हें नीम ऑयल छिड़काव हेतु दिया गया जो सब्जी में कीट नियंत्रण में सहायक रहा। इसकी कीमत भी अन्य कीटनाशक से कम थी तथा सेहत पर भी इसका खराब असर नहीं होता है।

जैविक खाद उत्पादन

किसानों को कई प्रकार के प्रशिक्षण दिए गए जिससे उनकी कृषि तकनीकी में बदलाव आये। इन्हीं प्रशिक्षणों में एक प्रशिक्षण केंचुआ खाद बनाने का भी दिया गया। इसमे गांव के कई किसानों ने हिस्सा लिया परियोजना के शुरूआत में किसानों को केंचुआ खाद हेतु वर्मी बैग वितरण किये गये थे। श्री ग्यासी द्वारा खाद बनाकर इसका उपयोग सब्जी एवं फसलों में किया जा रहा है इससे उन्हें काफी लाभ मिलता है। इस खाद को खेत में डालने से उन्हें रासायनिक खाद में होने वाले खर्चों से राहत मिली है।

मचान खेती

परियोजना के सहयोग एवं मार्गदर्शन से ग्यासी जी मचान बनाकर खेती कर रहे हैं। इस प्रकार की खेती से उन्हें काफी लाभ हो रहा है फार्मर फर्स्ट परियोजना के सहयोग से सब्जी फसलों के बीज उपलब्ध करवाकर मचान

सब्जी उत्पादन

ढीमरपुरा का सब्जी उत्पादन आसपास के गांवों में प्रसिद्ध है। बड़ा गांव ब्लॉक में सबसे ज्यादा सब्जी ढीमरपुरा में ही उगाई जाती है। श्री ग्यासी ने भी उत्पादन पर काफी ध्यान दिया और उत्पादन कर रहे हैं। इन्हें बाकी किसानों की अपेक्षा ज्यादा लाभ मिला। इन्होंने अमरूद के बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के बीच की खाली जगह पर भी पालक, धनिया, मेथी, मिर्ची, टमाटर आदि सब्जी उगाकर लाभ प्राप्त किया। श्री ग्यासी लगभग 2-3 एकड़ में सब्जी उत्पादन करते हैं। इसमें वह मिर्ची, गोभी, बैंगन और टमाटर आदि लगाते हैं। इन्हें संस्थान से अच्छी किस्म के बीज एवं तकनीकी खेती की समय-समय पर जानकारी से मिलती रहती है।

बनाकर खेती कर आय में वृद्धि हो रही है। श्री ग्यासी इस प्रकार की खेती से एक समय में पालक, गोभी, चुकन्दर के साथ-साथ बेल वाली प्रकार की सब्जी एक साथ ले रहे हैं। इससे उन्हें अतिरिक्त आय मिल रही है। श्री ग्यासी को देखकर ढीमरपुरा गांव में लगभग 30 किसान मचान बनाकर खेती कर रहे हैं। इस प्रकार की खेती से उन्हें काफी लाभ हो रहा है। ■

भाकृअनुप की द्विमासी हिंदी बागवानी पत्रिका

'फल फूल' के मई-जून अंक के प्रमुख आकर्षण

- संरक्षण एरोपोनिक्स: आलू में बीज उत्पादन की आधुनिक तकनीक
- अनोखा फल है ड्रैगनफ्रूट
- आय सृजन हेतु करौंदा (कैरिसा कैरेंडस) का मूल्य संवर्धन
- चन्द्रशूर: औषधीय गुणों से भरपूर बहुउपयोगी पौधा
- ग्लेडियोलस की व्यवसायिक खेती
- शकरकंद की उन्नत खेती
- फल उत्पादन विधि में शून्य जुताई की व्यवहार्यता
- बेहतर आय और टिकाऊ आजीविका के लिए संरक्षित खेती - एक सफल कृषक महिला उद्यमी
- आम के प्रमुख कीटो और उनका एकीकृत कीटों प्रबंधन
- पपीता स्वास्थ्यवर्धक फल है जिसमे होने वाले रोगों का प्रबंधन
- रबी प्याज में अधिक उपज हेतु समन्वित पोषक प्रबंधन
- फालसा की वैज्ञानिक खेती

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in